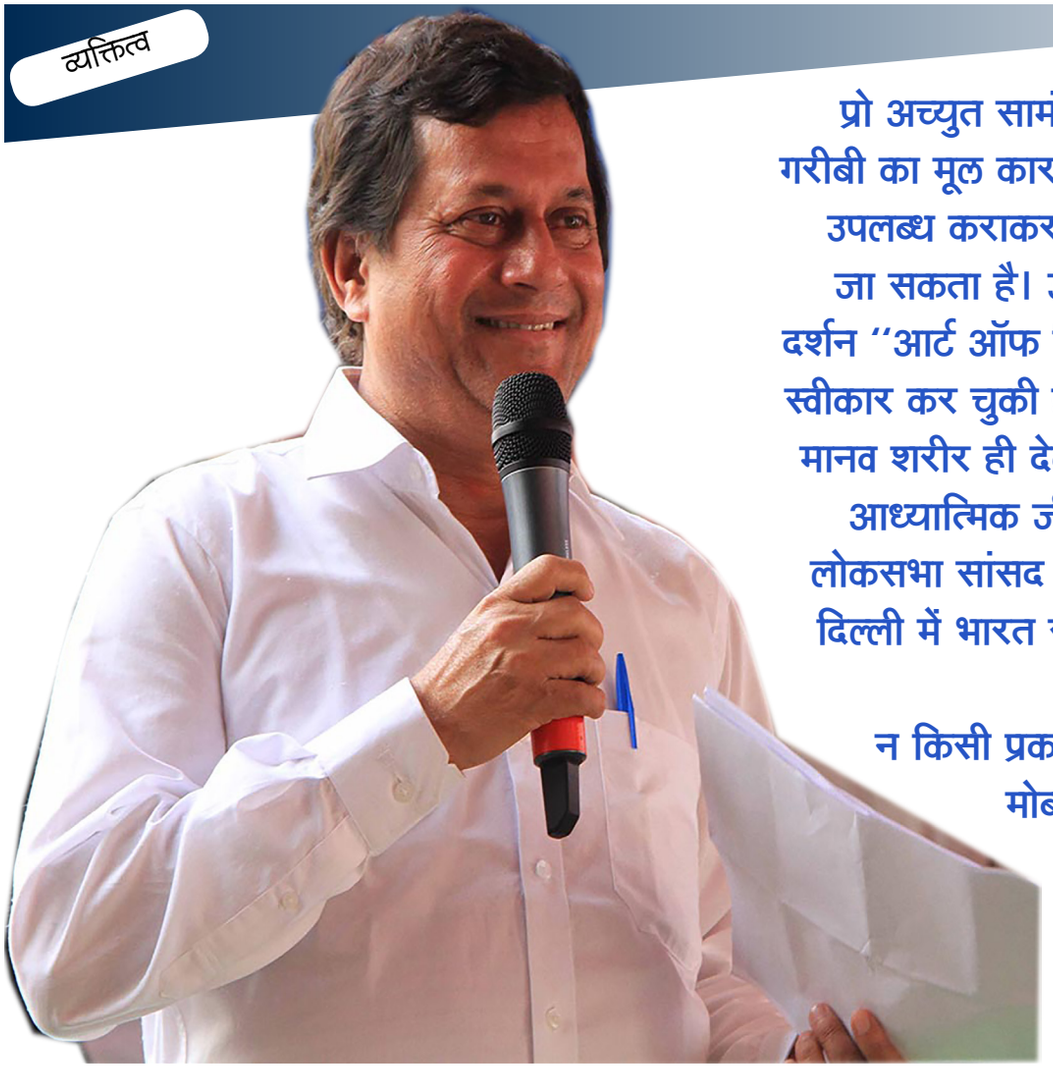

प्रो अच्युत सामंत भी यह मानते हैं कि विश्व की गरीबी का मूल कारण अशिक्षा है और उत्कृष्ट शिक्षा उपलब्ध कराकर ही विश्व भूखमरी को दूर किया जा सकता है। उनके जीवन का वास्तविक जीवन दर्शन ''आर्ट ऑफ गिविंग'' है जिसे पूरी दुनिया अब स्वीकार कर चुकी है। प्रो अच्युत सामंत के अनुसार मानव शरीर ही देवालय है और उसके लिए वे स्वयं आध्यात्मिक जीवन जीते हैं। भारत का एकमात्र लोकसभा सांसद प्रो अच्युत सामंत हैं जिन्होंने नई दिल्ली में भारत सरकार की ओर से कुछ भी नहीं लिया है, न अपने लिए आवास, न किसी प्रकार का वाहन, न टेलीफोन, न ही मोबाइल न ही अन्य सुविधाएं आदि।

भारत के एकमात्र ऐसे लोकसभा सांसद प्रो अच्युत सामंत जिन्होंने अबतक लगभग ९ लाख अनाथ, बेसहारा और गरीब आदिवासी बच्चों को अपने द्वारा स्थापित 'कीस' के माध्यम से स्वावलंबी बनाया

कीट-कीस के प्राण प्रतिष्ठाता तथा ओडिशा आदिवासी बाहुल्य कंधमाल लोकसभा के सांसद प्रो अच्युत सामंत भारत के एकमात्र ऐसे लोकसभा सांसद हैं जिन्होंने १९९२-९३ में अपने द्वारा स्थापित शैक्षिक संस्था कलिंग इस्टीट्यूट आफ सोसल साइंसेज; कीस, विश्व के सबसे बड़े आदिवासी आवासीय विद्यालय के माध्यम से अपनी ओर से निःशुल्क केजी कक्षा से लेकर पीजी कक्षा तक उत्कृष्ट शिक्षा उपलब्ध कराकर अबतक लगभग ०९ लाख अनाथ, बेसहारा और गरीब आदिवासी बच्चों को स्वावलंबी बना चुके हैं जबकि आज भी कीस में लगभग तीस हजार से भी अधिक आदिवासी बच्चे हैं जो अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर रहे हैं। जब उनसे पूछा गया कि उनके निःस्वार्थ जनसेवा, समाजसेवा तथा आदिवासी बच्चों की सेवा का क्या उद्देश्य है? तो उन्होंने मुसकराते हुए बताया कि भारत के राष्ट्रपिता बापू का देश को आजाद करने का जो उद्देश्य रहा होगा वहीं उद्देश्य उनके विदेह जीवन का है। आजीवन अविवाहित जीवन का है। उनका यह कृतसंकल्प है कि वे आजीवन भारतीय समाज के सबसे उपेक्षित तथा समाज के विकास से वंचित आदिवासी बच्चों को निःशुल्क उत्कृष्ट शिक्षा उपलब्ध कराना है जिसके लिए वे पूरे तन, मन और धन से वचनवद्ध हैं। प्रो

सामंत ने यह भी बताया कि जिस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास ने स्वांतः सुखाय कालजयी रचना 'रामचरितमानस' की रचना की है। महात्मा गांधी आजीवन सत्य, अहिंसा और त्याग को अपानकर बिना किसी स्वार्थ के भारत को आजाद कर चुके हैं। ठीक उसी प्रकार प्रो अच्युत सामंत का यह सपना है कि वे भी बिना किसी व्यक्तिगत स्वार्थ के आदिवासी बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अपनी ओर से निःशुल्क तथा उत्कृष्ट शिक्षा उपलब्ध कराकर उनके जीवन का सर्वांगीण विकास करेंगे ।

सच तो यह भी है कि प्रो अच्युत सामंत अपने बाल्यकाल की गरीबी से सबक लेकर आजीवन अविवाहित रहने तथा लोकसेवा का संकल्प लिया है। ५६ वर्षीय प्रो अच्युत सामंत को पूरी दुनिया उनकी कमाल की सादगी, विनम्रता, सदाचार जीवन के लिए सलाम करती है। सच तो यह भी है कि जिस प्रकार स्वामी विवेकानन्द ने आजीवन अज्ञानता, हीनता और निर्धनता को दूर करने के लिए वचनवद्ध होकर जगतगुरु बनकर अमर हो गये ठीक उसी प्रकार प्रो अच्युत सामंत भी यह मानते हैं कि विश्व की गरीबी का मूल कारण अशिक्षा है और उत्कृष्ट शिक्षा उपलब्ध कराकर ही विश्व भूखमरी को दूर किया जा सकता है। उनके जीवन का वास्तविक जीवन दर्शन ''आर्ट ऑफ गिविंग'' है जिसे पूरी दुनिया अब स्वीकार कर चुकी है। प्रो अच्युत सामंत के अनुसार मानव शरीर ही देवालय है और उसके लिए वे स्वयं आध्यात्मिक जीवन जीते हैं। भारत का एकमात्र लोकसभा सांसद प्रो अच्युत सामंत हैं जिन्होंने नई दिल्ली में भारत सरकार की ओर से कुछ भी नहीं लिया है, न अपने लिए आवास, न किसी प्रकार का वाहन, न टेलीफोन, न ही मोबाइल न ही अन्य सुविधाएं आदि।

प्रो अच्युत सामंत बाल्यकाल से ही आध्यात्मिक जीवन जीते हैं। ओडिशा कंधमाल लोकसभा के सांसद प्रो अच्युत सामंत न केवल लगभग ०९लाख आदिवासी बच्चों के जीवित मसीहा हैं अपितु आज भी उनके द्वारा स्थापित कीस के लगभग तीस हजार आदिवासी बच्चों के भी वे जीवित रोलमॉडल हैं। जब उनसे यह पूछा गया कि वे तो एक महान शिक्षाविद् के साथ-साथ आदिवासी बच्चों के जीवित मसीहा हैं फिर भी वे राजनीति में क्यों आये? तो प्रो अच्युत सामंत ने बड़ी ही सहजता के साथ बताया कि आपने तो सुना होगा कि ओडिशा के मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक पूरे भारत के मुख्यमंत्रियों में सबसे अच्छे व लोकप्रिय मुख्यमंत्री हैं जिनके पारदर्शी व्यक्तित्व से वे भी प्रभावित हैं।

मुख्यमंत्रीजी की कार्यशैली व कार्यसंस्कृति से वे पूरी तरह से प्रभावित हैं। ओडिशा के मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायकजी ने ही उनको अपने दल बीजू जनतादल की ओर से बड़े पैमाने पर लोकसेवा का मौका उनको दिया और यही कारण है कि वे ओडिशा के आदिवासी बाहुल्य कंधमाल लोकसभा के सांसद हैं। प्रो अच्युत सामंत ने जोर देकर यह कहा कि उनके जीवन का एकमात्र सपना है वृहद जनसेवा, लोकसेवा तथा आदिवासी बच्चों की सेवा जिसके लिए वे आध्यात्मिक व विदेह जीवन यापन करते हुए पूरा कर रहे हैं। प्रो अच्युत सामंत के अनुसार हमसब को अपने देश के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। अपनी मातृभाषा तथा राजभाषा का आदर करना चाहिए। भारत को आत्मनिर्भर बनाने में पूर्ण सहयोग करना चाहिए। ■

प्रस्तुतिः अशोक पाण्डेय